कर्म निर्जरा का साधन है तपस्या : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 12 अगस्त 2010

आचार्य महाश्रमण ने अपने नित्य प्रवचन में कहा कि तपस्या कर्म निर्जरा का साधन है। जो तपस्या करता है वह अपनी आत्मा को उज्जवल बना सकता है। उन्होंने शहर में छोटे-छोटे बच्चों द्वारा की जाने वाली विभिन्न प्रकार की तपस्याओं का उल्लेख करते हुए कहा कि व्यक्ति को जीवन में कुछ न कुछ करना चाहिए। तपस्या के दौरान मंत्र, जप, ध्यान, स्वाध्याय का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि तपस्या करने वाले का आध्यात्मिक सहयोग करने से भी निर्जरा होती है। तपस्या की चौबीसी का संगान कर स्वाध्याय में सहयोग देना चाहिए।

आचार्य महाश्रमण ने शरीर नौका बताते हुए कहा कि संसार समुद्र से पार पाने के लिए शरीर रूपी नौका का कुशलता से संचालन करना आवश्यक है। जो भोग पिपासा एवं व्यसनों में रमा रहता है वह नौका में छेद कर लेता है और संसार में परिभ्रमण करता रहता है। जो इस शरीर से संयम की साधना करता है वह आत्मोत्थान करता है। उन्हांने कहा कि पापकारी प्रवृत्ति करने से पाप कर्म का बंधन होता है। विकासित कर्मों को भोगना ही होता है। जो होनहार निश्चिंत होती है वह होनहार ही रहती है, इसलिए पहले से ही पापकारी प्रवृत्ति से बचना चाहिए और संयम को जीवन में उतरना चाहिए।

सोहनलाल सिंघवी को प्रेक्षा पुरस्कार

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में मोहनलाल कठोतिया सेवा कोष द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला प्रेक्षा पुरस्कार इस वर्ष का मुम्बई प्रवासी सोहनलाल सिंघवी को प्रदान किया गया। इस पुरस्कार स्वरूप सिंघवी को चातुर्मास व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष बिमलकुमार नाहटा ने प्रतिक चिन्ह एवं प्रशस्तिपत्र भेंट किया एवं कठोतिया सेवा कोष की ओर से राहुल कठोतिया ने सिंघवी को पुरस्कार राशि का चैक प्रदान किया। सिंघवी को यह पुरस्कार प्रेक्षाध्यान के क्षेत्र में की गई सेवाओं के लिए दिया गया।

इस मौके पर आचार्य महाश्रमण ने सिंघवी द्वारा प्रेक्षाध्यान एवं ज्ञानशाला के क्षेत्र में किये गये कार्यों का उल्लेख करते हुए आध्यात्मिक विकास करते रहने का आशीर्वाद प्रदान किया। पुरस्कार स्वीकृति भाषण में सोहनलाल सिंघवी ने इस मुकाम तक पहुंचने में आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण के आशीर्वाद एवं शासन गौरव साध्वी राजीमति की प्रेरणा को योगभूत बताया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठो ने सिंघवी मोमेन्टो भेंट कर सम्मान किया। हंसराज डागा ने साहित्य भेंट किया। कार्यक्रम का संचालन जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अशोक नाहटा ने किया। इस अवसर पर चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री (एफसीए) रतनदुगड़ आदि कई गणमान्य व्यक्ति विशेष रूप से उपस्थित थे।

महात्मा महाप्रज्ञ क्वीज प्रतियोगिता 26 को

सरदारशहर 12 अगस्त 2010

तेरापंथ सभा द्वारा 26 अगस्त की रात्रि 7.30 बजे आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में महात्मा महाप्रज्ञ क्वीज प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा। मुनि जयंतकुमार एवं मुनि भव्य कुमार के निर्देशन में आयोजित होने वाली इस प्रतियोगिता के मुख्य राउंड में पहुंचने के लिए 26 को सायं 7 बजे आयोजित प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होना आवश्यक होगा। तेरापंथ भवन में नया चिंतन, नया अन्दाज की तर्ज पर आयोजित होने वाली इस प्रतियोगिता की जानकारी देते हुए सभा के अध्यक्ष अशोक नाहटा ने बताया कि यह प्रतियोगिता आचार्य महाप्रज्ञ को अनुपम श्रद्धांजलि के रूप में आयोजित है। प्रतियोगिता की आधार पुस्तक आचार्य महाश्रमण द्वारा लिखित 'महात्मा महाप्रज्ञ' रखी गई है। सभा के मंत्री करणीदान चिण्डालिया के अनुसार प्रतियोगिता को नया रूप देने के लिए भीलवाड़ा के युवा संगायक एवं गीतकार संजय भानावत को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है, प्रतियोगिता के संयोजक तेजकरण भंसाली एवं चम्पालाल भंसाली ने बताया कि इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को आकर्षक पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे।

विशेष - जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा प्रतिनिधि सम्मेलन 14 अगस्त से 16 अगस्त, 2010 जिसमें देशभर की सभाओं के हजारों व्यक्ति होंगे सम्मलित।

- शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)